कक्षा (१२)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 2020

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

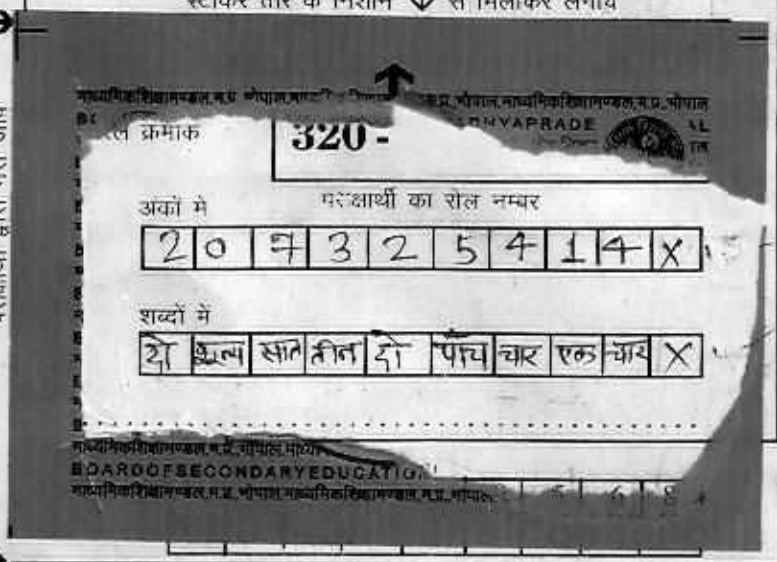

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल

रोल क्रमांक 320-

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	0	7	3	2	5	4	1	4	X

शब्दों में

दो	शून्य	सात	तीन	दो	पाँच	चार	एक	चार	X

BOARD OF SECONDARY EDUCATION

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 16

ग :— परीक्षा का दिनांक 02 03 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.C. **केन्द्र क्रमांक 731002**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
(हस्ताक्षर) 2/3/2020	(हस्ताक्षर)

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई तथा क्रमांक स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठ के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
प्रहलाद पाल वरिष्ठ अध्यापक शा.क.उ.मा.वि., नीमच कैंट AS - 7429	MUKESH BHEPARIYA ADHYAPAK-BW-9725

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

नोट :- "हायर सेकेण्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु निर्धारित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।"

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

desmat

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -1 Ans.

(i) महादेवी वर्मा ।

(ii) कबीर दास ।

(iii) सुजान ।

(iv) सावन गीत ।

(v) पाड़ोन के जंगल में ।

BSE

प्रश्न क्रमांक -2

(अ) छायावाद ।

(ब) श्री कृष्ण ।

(स) जल शोधन ।

(द) तीन ।

(ई) गणेश शंकर विद्यार्थी ।

भाग … कुल अंक

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न

प्रश्न क्रमांक - 3

(1) असत्य ।

(2) सत्य ।

(3) असत्य ।

(4) असत्य ।

(5) सत्य ।

प्रश्न क्रमांक - 4

(अ) गणेश जी ।

(ब) नई कविता ।

(स) नये मेहमान ।

(द) देवकी ।

(इ) महात्मा गांधी ।

BSE

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक – 5

(अ) उद्धव

(ब) साध्य एवं असाध्य रूप

(स) अन्योक्ति

(द) सन् 1943 से

(इ) तन्मयता

प्रश्न क्रमांक – 6

अथवा

कृष्ण ने वही का दोना पीठ के पीछे छिपा लिया था।

प्रश्न क्रमांक – 7

चातक की पीउ-पीउ की ध्वनि विरही हृदय को चोट पहुँचा रही है, इसीलिए चातक को घातक कहा जाता है।

प्रश्न क्र.

B S E

प्रश्न क्रमांक - ८

अथवा

क्षणिक आतंक से तात्पर्य तनिक देर के लिए आये हुए भय से होता हैं जो कि नवयुवक या वीरों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता हैं।

प्रश्न क्रमांक - 9

अथवा

फूल और मालिन मधुवर्षण करने के पाश्चात यौवन ढलने पर मुरझा जायेंगें। फूल और मालिन दोनों का हृदय समान हैं।

प्रश्न क्रमांक - 10

धरती के बसंत आगमन पर वन में हर्ष छा जाता हैं। नववयस्यका लतिका नये वस्त्रधारण करके अपने पति तरु से लिपट जाती हैं। कोयल ~~दादुर~~, दादुर व पही पपीहा आदि अपनी से उल्लास प्रकट करते हैं। वन की माया का

योग पूव पृष्ठ पृष्ठ के अंक कुल अंक

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA

प्रश्न क्र.

सौन्दर्य देखते ही बनता हैं।

प्रश्न क्रमांक - 11

अथवा

पटरी पर रेलगाड़ी के पहियों की खट - खट ही गजाधर बाबू के लिए मधुर संगीत था।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक - 12

छोटा एवं बिना हवादार घर होने के कारण रेवती अपने घर को जेलखाना कहती हैं।

प्रश्न क्रमांक - 13

अथवा

लेखक जब अपना नाम किसी पत्र-पत्रिका में पढ़ता हैं तो वह कहता हैं " मुझसे बड़ा तो मेरा नाम हैं जिनसे में मिला नहीं वह उनसे भी मिल आया हैं और अनेक कार्यालयों में

मुझे पहचान प्रदान की।" यदि मैं अपना नाम नहीं बताता तो मुझे सम्पादक कार्यालय मे अन्दर नहीं आने देता व ट्रेन का अंतरंग मित्र लेखक का समान उड़ाकर स्वयं लेट जाता। लेखक नाम कई स्थानों पर उनकी रक्षा करता हैं इसीलिए लेखक ने उक्त पंक्ति कहीं हैं।

प्रश्न क्रमांक - 14

उत्तराखंड के चारों धाम चार पवित्र नदियों के किनारे स्थित हैं। यमुनोत्तरी धाम यमुना नदी के किनारे-किनारे, गंगोत्री धाम गंगा नदी के किनारे-किनारे, केदारनाथ धाम मंदाकिनी नदी के किनारे तथा बद्रीनाथ धाम अलकनंदा नदी के किनारे-किनारे बसा हुआ हैं।

प्रश्न क्रमांक - 15

(i) सरोवर में पानी हैं।

(ii) कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक हैं।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 16

अथवा

छन्द की परिभाषा -

" कविता के शाब्दिक अनुशासन को छन्द कहते हैं। "

छन्द के प्रकार

① वर्णिक छन्द ② मात्रिक छन्द

① वर्णिक छन्द :- जिस छन्द में वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

② मात्रिक छन्द :- जिस छन्द में मात्राओं की गणना की जाती है, उसे मात्रिक छंद कहते हैं।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 17

अथवा

डॉ. रामकुमार वर्मा की पढ़ाई में रुचि थी। माँ ने रामकुमार वर्मा को पढ़ाई के संबंध में निर्देश दिया कि "कुमार पढ़ाई में सदैव प्रथम दर्जे का ध्यान रखना, अर्जुन ने जिस प्रकार चिड़िया की केवल आँख को ध्यान में रखा था।"

इस निर्देश का पालन रामकुमार वर्मा ने किया और एम. ए. की परीक्षा मे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

प्रश्न क्रमांक - 18

अथवा

राष्ट्र भाषा :- राष्ट्र भाषा से तात्पर्य राष्ट्र की भाषा से होता है। वह भाषा जिसका प्रयोग सम्पूर्ण राष्ट्र द्वारा किया जाता है, राष्ट्रभाषा की जनता कहलाती है।

प्रश्न क्र.

राष्ट्र भाषा की दो विशेषताएँ –

(1) राष्ट्रभाषा जन-सम्पर्क की भाषा होती हैं।

(2) राष्ट्रभाषा राष्ट्र की धरती से जुड़ी होने के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र की समस्त जनता को एकता के सूत्र में बाँधती हैं।

(3) राष्ट्रभाषा शिक्षा के विकास में सहायक होती हैं।

L S E

प्रश्न क्रमांक – 19

श्लेष अलंकार :- श्लेष का अर्थ होता है - चिपका हुआ। जिस काव्य में एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, तो उस काव्य में श्लेष अलंकार होता हैं।

उदाहरण –

" रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।"

मोती के अर्थ अनेक है- चूना, मोती

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्न क्रमांक - 20

प्रगतिवाद सन् 1943 से 1950 के मध्य माना जाता है। प्रगतिवाद की विशेषताएं निम्नलिखित है:-

[1] शोषकों के प्रति विद्रोह शोषितों के प्रति सहानुभूति :-

प्रगतिवादी कवियों ने अपने काव्य में पूँजीपति व शोषक वर्ग का विद्रोह किया हैं तथा मजदूरों, निर्धनों, कृषकों आदि के प्रति सहानुभूति व्यक्त की हैं।

(2) सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर बल :-

प्रगतिवादी कवियों ने सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर बल दिया हैं। पूँजीपति वर्ग तथा निर्धन वर्ग के मध्य आर्थिक असमानता रूपी खाई को कम करने के प्रयास किए हैं।

प्रगतिवाद के कवि व उनकी रचनाएँ -

कवि		रचनाएँ
1) नागार्जुन	-	युगधारा, सतरंगे पंखों वाली।
2) शिव मंगल सिंह सुमन	-	हिल्लोल, जीवन के गान।

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक – 21

अथवा

नाटक और एकांकी में अन्तर –

नाटक	एकांकी
(1) नाटक में अनेक अंक होते हैं।	(1) एकांकी में एक अंक होता हैं।
(2) नाटक में अधिकारिक के साथ अन्य गौण कथाएँ होती हैं।	(2) एकांकी में एक ही कथा घटना होती हैं।
(3) नाटक के कथानक में फैलाव एवं विस्तार पाया जाता हैं।	(3) एकांकी के कथानक में विस्तार पाया जाता हैं।
(4) नाटक में कथानक की विकास प्रक्रिया धीमी होती हैं।	(4) एकांकी में कथानक आरंभ से चरम लक्ष्य की ओर द्रुत गति से बढ़ता हैं।
(5) एक नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति हैं।	(5) एक एकांकी डॉ. रामकुमार वर्मा कृत दीपदान हैं।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

क्र.

प्रश्न क्रमांक - 22

तुलसी दास

~~रचनाएँ - (1) सूरसागर :- इस ग्रंथ में तुलसी दास ने सवा लाख पद लिखे हैं परन्तु वर्तमान में लगभग 7 या 8 हजार पद ही प्राप्त हुए हैं।~~

~~(2) सूरसारावली :- यह ग्रन्थ सूरसागर का सार है।~~

रचनाएँ :- (1) कवितावली
(2) दोहावली
(3) रामचरित मानस आदि।

भावपक्ष :- तुलसी दास का भाव पक्ष अत्यन्त समृद्ध है। जिसे हम कुछ द्वारा प्रदर्शित करने का प्रयास कर सकते हैं-

(1) लोक कल्याण की भावना :- तुलसीदास के ग्रन्थ या महाकाव्य रामचरित मानस में लोक कल्याण की भावना दृष्टव्य होती है।

(2) राम की भक्ति :- तुलसी दास सगुण उपासक कवि हैं जो राम को

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

अपना आराध्य मानकर काव्य की रचना करते हैं।

② समन्वयवादी दृष्टिकोण :- तुलसी दास जी काव्यों में समन्वयवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता हैं उन्होनें केवल राम की वंदना ही नहीं की अपितु गणेश, शिव, दुर्गा आदि की भी वंदना की। जिससे उनके समन्वयवादी दृष्टिकोण के साक्ष्य प्रस्तुत होते हैं।

B S E

कला पक्ष :- भाव पक्ष की तरह कला पक्ष की इनका पर्याप्त समृद्ध हैं।

① भाषा :- तुलसी दास ने अवधी तथा ब्रज भाषा में रचनाएँ लिखी हैं।

② शैली :- तुलसी दास जी ने मुक्तक तथा प्रबन्ध दोनो शैली में अपनी रचनाएँ की हैं।

③ अलंकार :- उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों की छटा इनके काव्य में दृष्टव्य होती हैं। अलंकार विधान रचनाओं के अनुकूल हैं।

④ छंद :- तुलसी दास जी ने दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया आदि छन्दों में अपनी रचनाएँ की हैं।

साहित्य में स्थान :- तुलसी दास जी रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनके संदर्भ में एक लेखक ने कहा –

" कविता करके तुलसीन लसें, तुलसी कविता लसें तुलसी की कला।"

उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट हैं कि हिंदी काव्य जगत में तुलसी का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

प्रश्न क्रमांक – 23

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

रचनाएँ :- ~~(1) चिन्ता मणि~~
(1) चिन्तामणि
(2) त्रिवेणी
(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि।

भाषा :- आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत कर सकते हैं।

(1) खड़ी बोली
(2) ~~आ~~ गम्भीर चिन्तन
(3) तत्सम युक्त ~~संस्कृतशब्दावली~~ संस्कृत शब्दावली

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

① खड़ी बोली :- तुलसी दास ने सरल, सहज, शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग है। वाक्य विन्यास लघु होने के कारण भाषा प्रवाहपूर्ण बन पड़ी है।

② गम्भीर चिन्तन :- इनकी भाषा में गम्भीर चिन्तन की प्रधानता है। वाक्य विन्यास सुगठित एवं परिमार्जित है।

③ संस्कृत शब्दावली का प्रयोग :- शुक्ल जी ने तत्सम युक्त संस्कृत शब्दावली का प्रयोग किया जिससे भाषा में थोड़ी क्लिष्टता आ गई है। मुहावरो एवं लोकोक्तियों का यथास्थान प्रयोग किया गया है।

शैली :- शुक्ल जी अपनी रचनाओं में स्वयं शैली का निर्माण किया है। इनकी मुख्यतया चार शैली रचनाओं में देखने को मिलती हैं।

① समीक्षात्मक शैली :- विभिन्न समीक्षात्मक निबन्धो व लेखो में इस शैली का प्रयोग किया है।

② ~~मनोवैज्ञा~~ गवेषणात्मक शैली :- शुक्ल जी ने इस शैली का प्रयोग भी अपनी कृतियो में किया है।

B S E

(3) वर्णात्मिक शैली :- वर्णात्मक शैली मे वर्णन की प्रधानता पाई जाती है जिसका प्रयोग शुक्ल जी अपनी कई रचनाओं में किया हैं।

(4) हास्य, व्यंग्य प्रधान शैली :- शुक्ल जी ने इस शैली का प्रयोग कम किया है परन्तु कहीं - कहीं इनकी रचनाओं मे यह शैली दिखाई देती हैं।

साहित्य में स्थान :- शुक्ल जी का आधुनिक समालोचकों निबंधकारो में प्रमुख स्थान है। शुक्ल जी युगवर्तक कहे जाते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 24

माटी कहै - — — — — — — न आया हाथ।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ "अमृतवाणी" नामक शीर्षक से अवतरित हैं इनके रचयिता कबीर दास जी हैं।

प्रसंग :- कबीर ने प्रस्तुत पंक्तियों मे शरीर की नश्वरता का अटल सत्य प्रदर्शित किया हैं।

क कुल अक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

व्याख्या :- कबीर दास जी कहते हैं कि मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू आज मुझे अपने पैरों के नीचे रौंद रहा है। एक समय ऐसा दिन भी आयेगा जब मैं तुझे रौंदूगी अर्थात शरीर नश्वरता की ओर संकेत किया गया। मृत्यु के पश्चात यह शरीर जला दिया जाता है अर्थात मिट्टी का चोला मिट्टी में ही मिल जाता है।

पुनः कबीर कहते हैं कि यह शरीर कच्चे मिट्टी के घड़े के समान है। पानी पड़ते ही नष्ट हो जाएगा और हमारे हाथ मे कुछ भी नहीं बचेगा अर्थात आत्मा हमारे शरीर से निकल जायेगी।

विशेष :- (1) शरीर की नश्वरता का ज्ञान दिया है।
(2) नीति परक दोहा छंद।
(3) शांत रस

कुल अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 25

असल प्रकाश तो - - - - - रुकती नहीं?

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्य "तिमिह गेह में किरण आचरण" से अवतरित है। इसके लेखक डॉ. श्याम सुन्दर दुबे जी हैं।

प्रसंग :- जीवन की सृजनात्मक प्रेरणा को उद्धृत किया गया है।

व्याख्या :- लेखक कहते है कि मनुष्य के अन्दर ही जीवन का प्रकाश छिपा हैं जो हमें आगे बढ़ने तथा अच्छे बनने की प्रेरणा देता हैं। उस प्रकाश का नाम है सृजन का प्रकाश। जो व्यक्ति अपने भीतर सहनशलिता, विवेक, परिश्रम आदि के गुण विकसित कर लेता है तो वह सृजन के प्रकाश से युक्त हो जाता है और प्रकाश दूर - दूर तक फैलकर चारों ओर प्रकाशमय कर देता है। यह अंधेरो पर विजय प्राप्त करता है। गेहूँ का पीलापन भी इसी प्रकाश द्योतक है कि वह सृजनात्मक हो।

विशेष :- (1) ~~आंचलिक~~ देशज शब्दों का प्रयोग।
(2) सृजनात्मक प्रकाश के माध्यम से मनुष्य के जीवन को प्रेरणा दी है।
(3) सरल, सहज खड़ी बोली।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 26

(अ) कर्मठता

(ब) सही श्रम वही है, जो ठोस परिणाम देता है।

(स) शिक्षण का उद्देश्य कर्मठ जनों का निर्माण करना होना चाहिए। कर्मठता से ही देश की अवनति उन्नति होती है। कर्मठता देश के विकास का आधार है।

प्रश्न क्रमांक - 27

[redacted]

योग पूर्व पृष्ठ

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

सेवा में

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल,
भोपाल (म.प्र.)।

विषय :- अंग्रेजी विषय की उत्तर-पुस्तिकाओं के पुनर्गणना हेतु।

महोदय जी,

विनम्र निवेदन है कि जब मेरा परीक्षा परिणाम मैंने देखा तो उसमें अंग्रेजी विषय में मैंने आशा से बहुत कम अंक पाये जो कि 42 थे। परन्तु मैंने 90-95 अंक का सही प्रश्न पत्र हल किया था।

जिससे आपसे निवेदन है कि आप अनुक्रमांक 207325 की अंग्रेजी की उत्तर पुस्तिका की पुनर्गणना करवाने की कृपा करें।

"धन्यवाद"

आपकी आज्ञाकारी
शिष्या - अ ब स
कक्षा - 12 वीं

दिनांक - 02/03/2020

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 28

(ब)

जल ही जीवन है

रूपरेखा :-

B S E

(1) प्रस्तावना ।

(2) जल जीवन का आधार ।

(3) जल की महत्ता ।

(4) बढ़ता जल प्रदूषण ।

(5) जल प्रदूषण के कारण ।

(6) शुद्ध जल की मात्रा में कमी ।

(7) प्रदूषित जल का प्रभाव ।

(8) जल प्रदूषण को रोकने उपाय ।

(9) उपसंहार ।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्रमांक – 28

अ

विज्ञान और मानव जीवन

रूपरेखा –

① प्रस्तावना

② विज्ञान हमारे चारों ओर

③ विज्ञान का मानव जीवन में महत्व

④ शिक्षण का ~~जागरूक व~~ रोचक विषय

⑤ विज्ञान का मानव जीवन में उपयोग

⑥ विज्ञान का दुरुपयोग करती मानव जाति

⑦ विज्ञान के लाभ

⑧ विज्ञान के अन्धानुकरण से हानि

⑨ उपसंहार

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

> विज्ञान ने मनुष्य को सुख सुविधा पहुचाई
> मनुष्य ने इससे उन्नति की ऊंचाई बढ़ाई

B
S
E

① प्रस्तावना :- आज का युग विज्ञान का युग है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे विज्ञान की तूती बोल रही है। वर्तमान समय में "जय जवान, जय किसान" के स्थान "जय विज्ञान" का नारा आज जनता के मुख पर उच्चारित हो रहा है। विज्ञान ने हमरे जीवन को प्रभावित किया है।

② विज्ञान हमारे चारो ओर :- हमारे जीवन की सुबह से शाम तथा जन्म से मृत्यु तक की समयावधि विज्ञान की क्रियाएं परिलक्षित होती है। सही मनुष्य ही नही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी विज्ञान के चमत्कारो से ओतप्रोत है। जीव जन्तुओ, पशु-पक्षियों आदि मे विज्ञान ही छिपा हुआ है। वर्तमान समय मे विज्ञान अनेक आविष्कार किए है जो हमें चमत्कार के रूप मे वरदान सिहद हुए है। विज्ञान का डंका सम्पूर्ण विश्व के देशो मे बोल रहा है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	02 03 2020

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक

731002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर स्वाति शुक्ला 02/03/20

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक .... तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

B
S
E

(3) विज्ञान का मानव [illegible] जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का बहुत महत्व है। विज्ञान ने जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। विज्ञान के चमत्कारों के माध्यम मानव जीवन अधिक सुविधाजनक एवं सुखी हो गया है। बस, कार, ट्रेन, से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनें सभी विज्ञान की देन है। विज्ञान का ज्ञान मनुष्य को साक्षर बनाता है। विज्ञान के माध्यम से मनुष्य प्रजाति परम्परावादी दृष्टिकोण से आधुनिक दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हुई है। मानव के जीवन मे विज्ञान के आने से मनुष्य का चहुमुखी विकास हुआ है।

पृष्ठ के अंकों का योग

④ विज्ञान शिक्षण का रोचक विषय :- शिक्षण में सभी विषयों का ज्ञान महत्वपूर्ण है, परन्तु इसमें विज्ञान अपनी महती भूमिका का निर्वहन करती है। विज्ञान के माध्यम से मनुष्य जिज्ञासा, रोचकता आदि का विकास होता है जिससे नई - नई जानकारियों की प्राप्ति होती है। इसीलिए विज्ञान को शिक्षा का एक अच्छा विषय कहा गया है।

⑤ विज्ञान का मानव जीवन में उपयोग :- विज्ञान का मानव जीवन में बहुत उपयोगी है। इसके माध्यम से हम हमारे आस - पास के पर्यावरण, अनुसन्धानों, पशु - पक्षियों की संरचना, जैविक गुण अजैविक गुण आदि का ज्ञान होता है।

⑥ विज्ञान का दुरुपयोग करती मानवजाति :- विज्ञान के लाभ और हानि दोनों से मनुष्य भलीभाँति परिचित होते हुए भी उसका दुरुपयोग कर रहा है। इस विज्ञान के दुरुपयोग से मानव जातियों के अनेक कष्ट सहन करने पड़ रहे हैं।

जैसे परमाणु बम के निर्माण से मनुष्य मनुष्य को ही मारने के लिए उतारू हो गया हैं। जिससे धरती पर मानवता जैसे गुण का निरन्तर ह्रास होते जा रहा हैं।

(+) विज्ञान के लाभ :- विज्ञान के लाभों को हम निम्न बिन्दुओं में परिलक्षित कर सकते हैं।

(1) विज्ञान शिक्षा में सहायक होते हैं। शिक्षा की अमूल्य निधि है विज्ञान।

(2) कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिक अविष्कार से उत्पादन में वृद्धि हुई।

(3) वैज्ञानिक अविष्कारों से हमारे भारत देश का नाम ऊँचा हुआ है जैसे चन्द्रयान नामक प्रक्षेपास्त्र को चन्द्रमा पर भेजने वाला देश बन गया है

(4) वैज्ञानिक अविष्कारों ने मानव के जीवन को आसान बना दिया हैं।

(5) सर्व सुविधा युक्त कर मनुष्य को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है।

(6) विज्ञान के अन्धानुकरण से हानि :- विज्ञान के दुरुपयोग से मनुष्य को हानि झेलनी पड़ी हैं।

विभिन्न अस्त्र, शस्त्र, परमाणु बमों आदि से मनुष्यता को हानि हो रही है। मनुष्य हिंसक प्रवृत्ति का बनता जा रहा है। पर्यावरण का प्रदूषण मनुष्य के सामने ज्वलन्त उदाहरण है।

⑦ उपसंहार :- विज्ञान के कुछ लाभ भी है और कुछ हानि भी हैं यह बात सिक्के के दो पहलू की तरह पूर्णतः सत्य है। विज्ञान के सदुपयोग से मानव धरती को स्वर्ग बना सकता है एवं सम्पूर्ण विश्व में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उक्ति को सिद्ध कर सकता है। इसके लिए मनुष्य को हिंसक प्रवृत्ति का त्यागकर, मनुष्यता, सहायता, अहिंसा आदि गुणों को अपनाना चाहिए।